International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(2): 27-29

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(2): 27-29
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 18-01-2018
Accepted: 21-02-2018

Nimita Kanyal
Department of Sanskrit,
Kumoun University, Nainital,
Uttarakhand, India

रामायणकालीन वास्तुशास्त्र में ज्योतिषशास्त्र की प्रासांगिकता

निमिता कन्याल

सारांश
भारतीय संस्कृति और साहित्य में वेदो के पश्चात आदिकवि वाल्मीकि विरचित रामायण का महत्त्वपूर्ण स्थान है। रामायण का ज्ञान स्रोत एक ऐसा स्रोत है जो शताब्दियों पर शताब्दियाँ बीत जाने पर भी भारतवर्ष में नाममात्र को सूखता नहीं है। रामायण आर्ष काल के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के रूप में आज भी भारतीय जनमानस में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। अतः ठीक ही कहा गया है–

''यावत स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च मही तले।
तावद् रामायण कथा लोकषु प्रचरिष्यति।।

रामायणकालीन समाज को मानव जीवन की सामाजिक राजनैतिक धार्मिक एवं आर्थिक स्थितियों का आदर्श कहा जा सकता है। तत्कालीन लोग कलात्मक अभिरूचि सम्पन्न थे। वैदिक युग की सरल एवं प्रारम्भिक कलात्मक प्रवृत्ति रामायण काल में आकर निःसन्देह ही एक उच्चतर स्तर तक पहुँच गई। वाल्मीकि ने चित्रकला वास्तुकला, संगीत, नृत्यकला आदि के विषय मे पर्याप्त सामग्री प्रस्तुत की है। वास्तुकला के क्षेत्र में रामायणकालीन भारतीय समाज ने आश्चर्यजनक प्रगति कर ली थीं। महर्षि वाल्मीकि द्वारा वर्णित नगरों दुर्गो तथा प्रासादों के वर्णन से यह स्पष्ट है कि उस समय वास्तु विद्या का एक व्यवस्थित एवं उन्नत रूप स्थिर हो चुका था।
वास्तुशास्त्र भारतीय ज्योतिष की समृद्ध और विकसित शाखा है। इन दोनों में अंग अङगी भाव सम्बन्ध है। जैसे शरीर का अपने विविध अंगों के साथ सहज और अटूट सम्बन्ध होता है। ठीक उसी प्रकार ज्योतिष शास्त्र का अपनी सभी शाखाओं सामुद्रिक शास्त्र, स्वरशास्त्र एवं वास्तुशास्त्र के साथ सम्बन्ध है।
ज्योतिष शास्त्र का उल्लेख वास्तुशास्त्र में उसकी स्थिति एवं महत्ता बताने के लिए किया गया है। ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र में इतनी निकटता का कारण यह है कि दोनों का उद्भव वैदिक संहिताओं से हुआ है, दोनों का विकास भारतीय जीवन दर्शन से प्रेरित रहा है। दोनों शास्त्रों का लक्ष्य मानवमात्र को सुविधा और सुरक्षा देना है। दोनों ही शास्त्रों का प्रतिपाद्य विषय जीवन में घटित होने वाला घटनाक्रम है।

वाल्मीकि रामायण का संक्षिप्त परिचय

महर्षि वाल्मीकि द्वारा विरचित रामायण आदि महाकाव्य के नाम से जाना जाता है। वेदों के पश्चात् सर्वप्रथम जिस अनुष्टुप वाणी का प्रवर्तन हुआ, वह निःसन्देह आदिमहाकाव्य है। महर्षि वाल्मीकि के द्वारा विरचित होने के कारण इसे आर्षकाव्य भी कहा जाता है। ''वेदोऽखिलो धर्ममूलम'' इस कथन के अनुसार वेद स्वरूप रामायण भी धर्म का मूल है।
संस्कृत वाऽमय में रामायण की गणना विशिष्ट ग्रन्थ के रूप में की जाती है। रामायण का वर्ण्य विषय विस्तृत तथा दृष्टिकाण व्यापक है। इस महाकाव्य की कथा वस्तु सात काण्ड़ों में विभक्त है–

01– बालकाण्ड़
02– आयोध्या काण्ड़
03– अरण्य काण्ड़
04– किष्किकन्धा काण्ड़
05– सुन्दर काण्ड़
06– युद्ध काण्ड़
07– उत्तर काण्ड़

इन काण्ड़ों में कवि ने मानव जीवन के विविध पक्षों को अंकित किया है। कवि ने राम राज्य के माध्यम से आदर्श राज्य का रूव प्रस्तुत करते हुए प्रत्येक पहलू को स्पष्ट किया है।

कूटशब्दः रामायणकालीन, वास्तुशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र

Correspondence
Nimita Kanyal
Department of Sanskrit,
Kumoun University, Nainital,
Uttarakhand, India

प्रस्तावना

वास्तु शब्द का अर्थ है ''गृह निर्माण करने योग्य भूमि।'' ''वस निवासे'' धातु से ''वसे रगारेणिच्च'' इस उणादि सूत्र से तुन प्रत्यय होने पर ''वास्तु'' शब्द निष्पन्न होता है। जिसका व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है–''वसन्ति प्राणिनो यत्र''। अर्थात् वह स्थान जिसमें मनुष्य रहते हैं। इस प्रकार वे मकान, भवन, महल, नगर एवं मंदिर आदि जिनमें मनुष्य रहते हैं, वास्तु कहलाते हैं। अर्थशास्त्र में इनका अर्थ गृह, क्षेत्र, वाटिका, सेतु, भवन, तालाब, पुष्करिणी आदि है। इस वास्तु के वैदिक देवता को वास्तोस्पति या वास्तुप के नाम से अभिहित किया गया है। वहाँ पर द्विपद एवं चतुष्पद प्राणियों के कल्याण एवं रोग रहित आवास के लिए प्रार्थना की गई है–साथ ही उन्हें नमस्कार किया गया है यथा–

''वास्तोस्यते प्रति जानीह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवा नः।
यत् त्वमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भवो द्विपदे शं चतुष्पदे।।''[3]
नमो ..... वास्तुपाय''।। [4]

भवन निर्माण एवं शिल्प विज्ञान का नाम वास्तु शास्त्र है, जिसका विकास मानव सभ्यता के साथ–साथ हुआ। मनुष्य का आरम्भिक जीवन अस्थिर था। वह एक स्थान से दूसरे स्थान घूमता, शिकार करता तथा विचरण करता रहा धीरे–धीरे उसने विकास करते हुए निवास एवं सामूहिक निवास का निरूपण किया तत्पश्चात् उसने अपनी प्रत्येक आवश्यकता के लिए अनेक प्रकार के स्वतन्त्र भवनों का निर्माण किया। जनसामान्य के जीवन में वास्तु शास्त्र का महत्व इसकी उपयोगिता के कारण ही समझा जाता है। प्राचीन वाङ्मय में वर्णित अनेक प्रसंगों में आश्रमों में पर्णकुटी, यज्ञशाला, गौशाला एवं छात्रावास तथा राजाओं के महलों एवं मंदिरों का वर्णन मिलता है। इनके निर्माण की प्रविधि शुल्प सूत्रों में प्राप्त होती है। अतः यह कहना कि प्राचीन काल में भारतीय वास्तुकला (भवन निर्माण की प्रक्रिया) से अनभिज्ञ थे, एक भ्रान्त धारणा है। रामायण में भवन निर्माण का कार्य करने वाले कारीगरों के लिए स्थपति, वर्धकी और तक्षक नाम प्रयुक्त हुए हैं।

ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्रः–

ज्योतिषशास्त्र वह विज्ञान है, जो मनुष्यों और सांसारिक कार्यों में पड़ने वाले अनेक प्रभावों का लेखा रखता है। ज्योतिष का आधार खगोल शास्त्र या नक्षत्र विज्ञान है। यजुर्वेद में कहा गया है–ज्योतिष एक विज्ञान है इनमें नक्षत्रों की गति आदि का ज्ञान किया जाता है।

''प्रज्ञानाय नक्षत्र दर्शनम'' [5]

वेदानुरूप आदिकवि वाल्मीकि ने भी कहा है–

''नक्षत्र अदिति दैवत्ये स्वोच्च संस्थेषु पंचसु।''[6]

ज्योतिष शास्त्र के अन्तर्गत सूर्य एवं उसके साथ ग्रह, चन्द्रमा, राशियाँ, नक्षत्र समूह एवं आकाश के परिदृश्य एवं इनमें से प्रत्येक के व्यवहार या गति–स्थिति को एक निश्चित कोण में जाना जा सकता है। ज्योतिष को सांवत्सरपाठी नाम देते हुए वराहमिहिर ने उसे उसकी दैवज्ञता शक्ति के अनुरूप ब्रह्मलोक प्रतिष्ठा के अनुरूप माना है, जिसे भारतीय वास्तुविद्या के सन्दर्भ में सब प्रकार के प्रशंसनीय कदम माना जा सकता है। आचार्य का कथन है–

''न सांवत्सरपाठी च नरकेषू पपद्यते।
ब्रह्मलोक प्रतिष्ठां च लभते देव चिन्तकः''।।[7]

रामायणकाल में वैदिक जीवन में ज्योतिष अथवा मुहूर्त शास्त्र को बड़ा महत्व प्रापत था। प्रत्येक नवीन कार्य को शुभ मुहूर्त में आरम्भ करने का विशेष ध्यान रखा जाता था। राज्याभिषेक, युद्ध के लिए प्रस्थान, गृह प्रवेश, विवाह संस्कार तथा यात्रा आरम्भ आदि कार्य सदैव ज्योतिष सम्मत घड़ियों में सम्पन्न किये जाते थे।

''अद्यचन्द्रोऽभ्युपगमत पुष्यात पूर्व पुनर्वसुम्।
श्वः पुष्ययोगं नियतं वक्ष्यन्ते दैवचिन्तकाः।। [8]

यदि इन कार्यों के निर्वाह में कोई बाधा या दुर्घटना होती है तो उसका कारण कोई अशुभ मुहूर्त माना जाता है, जैसा कि जटायु ने राम को बताया था कि रावण अनजाने में सीता को विंद नामक मुहूर्त में अपहरण कर बैठा था (जो खोने वाले के लिए शुभ और पाने वाले के लिए अशुभ था)। अतएव इस मुहूर्त में सीता को हर कर रावण के लिए उससे अलग होना तय था और रावण का सर्वनाश निश्चित था।

''येनयाति मुहूर्तेन सीतामादाय रावणः।
विप्रणष्टं धनं क्षिप्रं तत्स्वामी प्रतिद्यते।।
विन्दो नाम मुहूर्तेऽसौ न च काकुत्स्थ सोऽवुधत्।
त्वत्प्रियां जानकी हत्वा रावणे राक्षसेश्वरः।
झषवद् वडिशं गृह्य क्षिप्रमेव विनश्यति।। [9]

तत्कालीन समाज की आस्था थी कि प्राणियों में कोई भी ऐसा नहीं जो दैव के विधान को समाप्त कर सके।

''कश्चदैवेन सौमित्रे, योद्धभुत्सहते पुमान।
यस्य नु ग्रहण किंचित कर्मणोंऽन्यत्र दृश्यते।।[10]

रामायणकालीन लोगों की फलित ज्योतिष में भी बड़ी आस्था थी। ज्योतिषी को लाक्षणिक, लक्षणी, कार्तान्तिक गणक या दैवज्ञ कहते थे। मुहूर्त ज्योतिष विद्या ब्राहमंणो की थाती मानी जाती थी। राजदरबारों में उनकी नियुक्ति होती थी। महाराज दशरथ को उनके ज्योतिषियों ने बताया था कि आपके जन्म नक्षत्र को सूर्य, मंगल और राहु इन दारूण ग्रहों ने घेर लिया है। ऐसे निमित्तों से राजा बहुधा विपत्ति में पड़कर प्राणों से हाथ धो बैठता है।

''अवष्टवधं च मे राम नक्षत्रां दारूण ग्रहैः।
आवेदयन्ति दैवज्ञाः सूर्याऽगारक राहुभिः।।
प्रायेण च निमित्तानामीदृशां समुझते।
राजा हिं मृत्यमाप्नोति धोरां चापदमृच्छति।।''[11]

वास्तु की दृष्टि से हमारा पवित्र ग्रन्थ रामायण सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। वाल्मीकि ने ज्योतिषशास्त्र का स्थल–स्थल पर उल्लेख किया है। रामायणकालीन मनुष्य नक्षत्र पंचांग से भली–भॉति परिचित थे। राम के जन्म के दिन चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि और पुनर्वसु नक्षत्र था। उस समय सूर्य, मंगल, शनि, गुरू और शुक्र अपने–अपने उच्च स्थानों में (क्रमशः मेष, मकर, तुला, कर्कट और मीन राशियों में) विद्यमान थे। कर्क लग्न में कौसल्या देवी ने दिव्य लक्षणों से युक्त श्री राम को जन्म दिया।

''ततो यज्ञे समाप्ते तु ऋतूनां षट् समत्ययुः
तत्श्च द्विादशे मासे चैत्रो नावामिके तिथौ।।
नक्षत्रेऽदिति देवत्ये स्वोच्चसंस्थेषु पंचसु।
ग्रहेषु कर्कटे लग्ने वाक्यताविन्दुना सह।।
प्रोद्यमाने जगन्नाथं सर्वलोकनमस्कृतम।
कौसल्याजनयद् रामं दिव्य लक्षण संयुतम्।। [12]

भरत का जन्म पुष्य नक्षत्र और मीन लग्न में हुआ था। सुमित्रा के दोनों पुत्रों का जन्म आश्लेषा नक्षत्र और कर्क लग्न में हुआ था।

''पुष्ये जातस्तु भरतो मीनलग्ने प्रसन्नधीः
सार्पे जातौ तु सौमित्री कुलीरेऽभ्युदिते रवौ''।। [13]

अतः रामायणकालीन आर्य वैदिक साहित्य में उल्लिखित कर्मकाण्ड के निष्ठावान अनुगामी थे। किसी क्रिया विशेष का मन्त्रों के अनुसार सम्पन्न होना ही उसके सुचारू अनुष्ठान का माप दण्ड था। धार्मिक क्रियाओं को यथाविधि, यथाशास्त्रम ''शास्त्रदृष्टेन विधिना'' किये जाने का वाल्मीकि ने बार–बार उल्लेख किया है।

निष्कर्ष

संस्कृत साहित्य भारतीय समाज के भव्य विचारों का रूचिर दर्पण है। रामायण इस विराट भारत वर्ष की उज्ज्वल ज्ञान परम्परा का एक मात्र अमर स्मारक आदिग्रन्थ है। वैदिक और लौकिक युगों के संघर्षमय काल में रामायण एक सन्धिग्रन्थ के रूप में जाना जा सकता है। साधारण लोगों की यह धारणा बनी हुई है। संस्कृत साहित्य में विज्ञान ज्योतिष, वैद्यक, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र स्थापत्य संबंधी साहित्य प्रचूर मात्रा में विद्यमान है। किसी के जीवन में समृद्धि तभी आ सकती है, जबकि वह अपने कार्य स्थल, अपने गृहस्थल अपने गाँव या नगर को जीवन्त माने। रामायण काल में भी यह विचार बना हुआ था, तभी भगवान श्री राम वनवास से लौटते समय सीता से कहते हैं–

एषा सा दृश्यते सीते राजधानी पितुर्भम।
अयोध्या कुरू वैदेहि प्रणामं पुनरागता।। [14]

अतः उपर्युक्त विवेचन रामायणकालीन वास्तुशास्त्र में ज्योतिषशास्त्र की प्रासांगिकता को मानव–जीवन में उत्कृष्टता प्रदान करते हुए सुख–समृद्धि प्रदान करने में सहयोगी माना जा सकता है।
वाल्मीकि ने रामायण का सृजन कर अनेक रामायणों तथा परवर्ती रामविषयक काव्यों को संजीवनी प्रदान की है। रामायणी कथा का आश्रय लेकर कविगण अपनी सरस्वती को चिरकाल से प्रभावित करते आये हैं। अन्त में राम–राम कूजन करने वाले आदिकवि वाल्मीकि को नमन श्रेयस्कर है–

''कूजतं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
आरूह्म कविता शाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम।।'' [15]

सन्दर्भ सूची

1. वा0रा0 बाल का0–2/36
2. मनुस्मृति–2/6
3. ऋग्0–7/54/1
4. यजु0–16/39
5. यजु0अध्याय0–30/10
6. बाल का0–18/9
7. वृहत्सहिता (वराहमिहिर) सांवत्सर सूत्राध्याय श्लो0–28
8. अयोध्या का0–4/21
9. अरण्य का0–68/12–13
10. अयोध्या का0–22/21
11. अयोध्या का0–4/18–19
12. बाल का0–18/8–10
13. बाल का0–18/15
14. युद्ध का0–123/52
15. बाल का0–तिलकटीका प्रारम्भिक श्लोक–6